SPVVS'S

G. P. PORWAL ARTS, COMMERCE & V. V. SALIMATH SCIENCE COLLEGE SINDGI

DEPARTMENT OF HINDI

2022-23

project

सुमित्रानंदन पंत

Submitted By

-: Murtuja Yalvar B.A II sem

-: Muskan Chapi B.A II sem

Submitted To

Prof. M. J. Sanpal

Head | Coordinator IQAC | Principal,

INDEX / अनुक्रमणिका

#. सुमित्रानंदन पंत का जीवन परिचय

#. सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय

#. कृतियां और रचनाएं

#. भाषा शैली

#. सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक में स्थान

#. प्रारंभिक शिक्षा

#. सुमित्रानंदन की प्रमुख कृतियां

#. पुरस्कार और सम्मान

सुमित्रानंदन पंत का जीवन परिचय

हिंदी साहित्य का आरंभिक इतिहास में अमूल्य योगदान रहा है। आरंभ भूमि पर ऐसे कई लेखक और कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी कलम की ताकत से समाज सुधार के कार्य किए। जैसे जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि। अपको हिंदी भाषा के एक ऐसे कवि के बारे में बताने जा रहे हैं जिनके बाद बिना हिंदी साहित्य की कल्पना भी नहीं कि जा सकती जिनका नाम है सुमित्रानंदन पंत।

पूरा नाम	सुमित्रानंदन पंत
अन्य नाम	गुसाईं दत्त
जन्म	20 मई 1900
जन्म भूमि	कौसानी, उत्तराखण्ड, भारत
मृत्यु	28 दिसंबर, 1977
मृत्यु स्थान	इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
कर्म भूमि	इलाहाबाद
कर्म-क्षेत्र	अध्यापक, लेखक, कवि
मुख्य रचनाएँ	वीणा, पल्लव, चिदंबरा, युगवाणी, लोकायतन, युगपथ, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद आदि
विषय	गीत, कविताएँ
भाषा	हिन्दी
विद्यालय	जयनारायण हाईस्कूल, म्योर सेंट्रल कॉलेज
पुरस्कार-उपाधि	ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्म भूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार
नागरिकता	भारतीय
आंदोलन	रहस्यवाद व प्रगतिवाद
इन्हें भी देखें	कवि सूची, साहित्यकार सूची

कविताएं	कविताएं
• वीणा (1919) • ग्रंथि (1920) • पल्लव (1926) • गुंजन (1932) • युगांत (1937) • युगवाणी (1938)	• स्वर्णधूलि (1947) • उत्तरा (1949) • युगपथ (1949) • चिदंबरा (1958) • कला और बूढ़ा चाँद • लोकायतन (1964

#. जीवन परिचय

कविवर सुमित्रानंदन पंत का जन्म २० मई 1900 को अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित गंगा दत्त था। जन्म के 6 घंटे पश्चात ही इनकी माता स्वर्ग सिधार गई। अत: इनका लालन पालन पिता तथा दादी ने किया।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी गांव मे तथा उच्च शिक्षा का पहला चरण अल्मोड़ा में और बाद में बनारस के 'क्वींस' कॉलेज में हुआ। इनका काव्यगत सृजन यहीं से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। काशी में पंत जी का परिचय सरोजिनी नायडू तथा रविंद्र नाथ टैगोर के काव्य के साथ-साथ अंग्रेजी की रोमांटिक कविता से हुआ और यहीं पर इन्होंने कविता प्रतियोगिता

में भाग लेकर प्रशंसा प्राप्त की। 'सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित होने पर उनकी रचनाओं ने काव्य-मर्मज्ञों के हृदय में अपनी धाक जमा ली। वर्ष 1950 में ये 'ऑल इंडिया रेडियो' के परामर्शदाता पद पर नियुक्त हुए और वर्ष 1957 तक के ये प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से संबद्ध रहे। ये छायावाद के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। इन्होंने वर्ष 1916-1977 तक साहित्य सेवा की। 28 दिसंबर, 1977 को प्रकृति का यह सुकुमार कवि पंचतत्व में विलीन हो गया।

सुमित्रानंदन पंत का वास्तविक नाम गुसाईं दत्त रखा गया था। लेकिन उनको अपना नाम पसंद नहीं आया इसलिए उन्होंने बाद में अपना नाम बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख दिया।

सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय :

सुमित्रानंदन पंत का बाल्यकाल कौसानी के सुरम्य वातावरण में व्यतीत हुआ। इस कारण प्रकृति ही सुमित्रानंदन पंत के जीवन सहचरी के रूप में रही और काव्य साधना भी प्रकृति के बीच रहकर ही की। अतः प्रकृति वर्णन, सौन्दर्य प्रेम और सुकुमार कल्पनाएँ उनके काव्य में प्रमुख रूप से पायी जाती है।

प्रकृति - वर्णन की दृष्टि से पन्त जी हिंदी के वर्डसवर्थ माने जाते हैं। पंत ही जी के साहित्य पर कवींद्र रवींद्र, स्वामी विवेकानंद और अरविंद दर्शन का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है इसलिए उनकी बाद की रचनाओं में अध्यात्मवाद और मानवतावाद के दर्शन होते हैं।

अतः में सुमित्रानंदन पंत जी प्रगतिवादी काव्यधारा की ओर उन्मुख होकर दलित और शोषितों की लोक क्रांति के अग्रदूत पंत जी छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भावना कोमल और अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण है। वे काव्य जगत में कोमल भावना ओं और सुकुमार कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस दृष्टि से पंत जी का हिंदी साहित्य में सर्वोपरि स्थान है।

कृतियाँ और रचनाएँ

→ पंत जी की कृतियाँ निम्नलिखित हैं -

- काव्य - वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, स्वर्ण किरण आदि।
- नाटक - रजतरश्मि, शिल्पी, ज्योत्स्ना।
- उपन्यास - हार
- पंत जी की अन्य रचनाएँ हैं - पल्लविनी, आत्मा, स्वर्ण किरण, युगपथ, ऋता, कला और बूढ़ा चाँद, शिल्पी आदि

#. भाषा शैली :-

पंत जी की शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है। बांग्ला तथा अंग्रेजी भाषा से प्रभावित होने के कारण इन्होंने गीतात्मक शैली अपनाई। सरलता, मधुरता, चित्रात्मकता, कोमलता और संगीतात्मकता इनकी शैली की प्रमुख विशेषताएं हैं।

#. सुमित्रानंदन पंत का साहित्य में स्थान :-

पंत जी निर्विवाद रूप से एक सजग प्रतिभाशाली कलाकार थे। इनकी काव्य-साधना सतत विकासोन्मुखी रही है। ये अपने काव्य के बाह्य और आन्तरिक दोनों पक्षों को सँवारने में सदैव सचेष्ट रहे हैं। प्रकृति के सर्वाधिक सशक्त चितेरे के रूप में आधुनिक हिंदी काव्य में ये सर्वोपरि हैं। पंत जी निश्चित ही हिंदी कविता के शृंगार हैं, जिन्हें पाकर माँ भारती कृतार्थ हुई है।

#. प्रारंभिक शिक्षा -

इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई थी। 1918 में वे अपने भाई के साथ काशी आ गई और वहाँ क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगी। मैट्रिक उत्तीर्ण करने के बाद यह इलाहाबाद आ गई। वहाँ पर इन्होंने कक्षा बारहवीं तक की पढ़ाई की। 1919 में महात्मा गांधी के सत्याग्रह से प्रभावित होकर अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ दी और स्वाधीनता

आंदोलन में सक्रिय हो गई। हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला का स्वाध्याय किया। इनका प्रकृति से अगाध लगाव था। बचपन से ही सुंदर रचनाएं लिखा करती थीं।

#. सुमित्रानंदन की प्रमुख कृतियां :-

→ कविता संग्रह / खंडकाव्य
→ उच्छ्वास
→ पल्लव
→ वीणा
→ ग्रंथि
→ गुंजन
→ युगांत

#. चुनी गई रचनाओं के संग्रह :-

→ युगपथ
→ चिदंबरा
→ पल्लविनी
→ स्वच्छंद

#. पुरस्कार और सम्मान :-
चिदंबरा के लिए जानपीठ लोकायतन के लिए सोवियत नेहरू शांति पुरस्कार और हिंदी साहित्य की इस अनवरत सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। सुमित्रानंदन पंत के नाम

पर कौसानी में उनके पुराने घर को जिसमें वह बचपन में रहा करते थे सुमित्रानंदन पंत वीथिका के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत प्रयोग की वस्तुओं जैसे कपड़ों कविताओं की मूल पांडुलिपियों छायाचित्र और पुरस्कारों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें एक पुस्तकालय भी है जिसमें उनकी व्यक्तिगत तथा उनसे संबंधित पुस्तकों का संग्रह है।

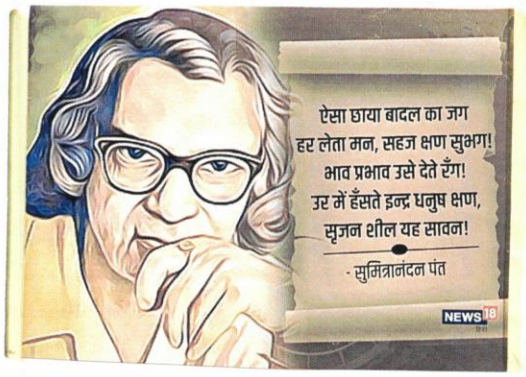

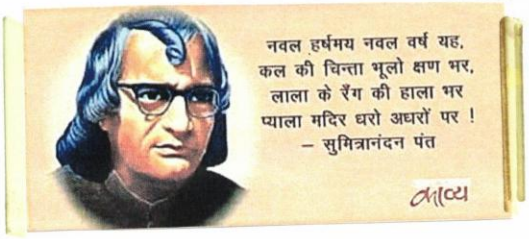

सुमित्रानंदन पंत की कविता

झम झम झम झम मेघ बरसते हैं सावन के
छम छम छम गिरतीं बूँदें तरुओं से छन के।
चम चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम थम दिन के तम में सपने जगते मन के।

ऐसे पागल बादल बरसे नहीं धरा पर,
जल फुहार बौछारें धारें गिरतीं झर झर।
आँधी हर हर करती, दल मर्मर तरु चर् चर्
दिन रजनी औ पाख बिना तारे शशि दिनकर।

पंखों से रे, फैले फैले ताड़ों के दल,
लंबी लंबी अंगुलियाँ हैं चौड़े करतल।
तड़ तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल
टप टप झरतीं कर मुख से जल बूँदें झलमल।

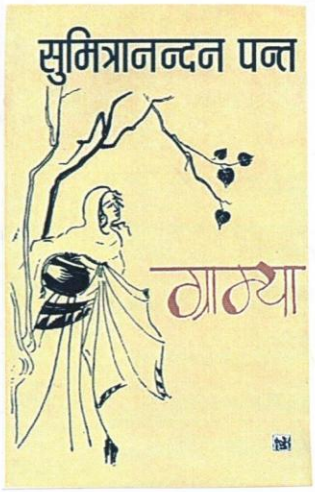

ग्राम्या (1964)

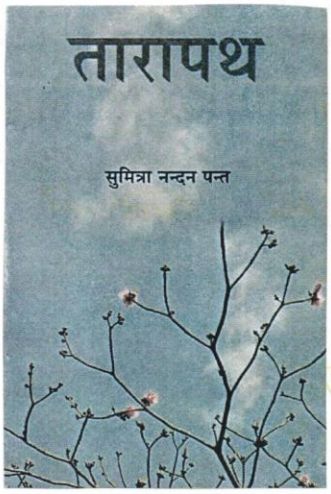

Tarapath (1968)
तारा पथ